

डॉ. यामीनी कृष्णमूर्ति
Dr. Yamini Krishnamurti



पद्म विभूषण
Padma Vibhushan



राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए
Receiving the decoration from the President

डॉ. यामीनी कृष्णमूर्ति

डॉ. यामीनी कृष्णमूर्ति भारतीय शास्त्रीय नृत्य के महानतम प्रतिपादकों में से एक हैं। आपका नाम भरतनाट्यम का पर्याय हो गया है।

2. आपका जन्म 28 जनवरी, 1940 को हुआ। भारतीय शास्त्रीय नृत्य में आपके योगदान को विशिष्ट माना गया है क्योंकि आपने भरतनाट्यम और कुचीपुड़ी दोनों में "देवदासी" विषयों को पुनर्जीवित करने के अलावा विशाल संस्कृत साहित्य से बड़ी संख्या में कविताओं से रंगमंच को सुशोभित किया। लयपूर्ण तकनीकों में आपने तीव्रतम और सर्वाधिक जटिल 'ताल' पैटर्नों को अपनाकर एक जाज्वल्यमान प्रवृत्ति स्थापित की। शायद यह ऐसा क्षेत्र था जहां एक नई प्रवृत्ति स्थापित की गई। आप कूचीपुड़ी और ओडिशी को पूरे विश्व में मंच पर प्रतिपादन के लिए जानी जाती हैं। आपकी भरतनाट्यम में प्रवृत्ति स्थापक तथा राह निर्माता के रूप में सराहना की गई है। आपकी प्रशंसा एक ऐसे व्यक्ति के रूप में की गई है जिनको कुचीपूड़ी को पुनर्जीवित करने का श्रेय जाता है। आपको एक ऐसा व्यक्ति होने का श्रेय है जिन्होंने ओडिशी को एक नया आयाम दिया है। आप शास्त्रीय नृत्य के क्षेत्र में आज इस देश में जीता–जागती महानायिका हैं।

3. भरतनाट्यम और कुचीपूड़ी को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच पर लाने का श्रेय आपको जाता है। आपने उत्तरी भारत में भी नृत्य को लोकप्रिय बनाया। आपने दिल्ली में यामिनी स्कूल ऑफ डांस की स्थापना की। आपके द्वारा लिखी गई पुस्तक है नाट्य एंड पैशन फॉर डांस। भारत सरकार के फिल्म प्रभाग ने आपके बारे में एक फिल्म बनाई है और नाट्य मूर्ति नामक टैली सिरीयल बनाए गए हैं और इनमें मंदिर और नृत्य के साथ संबंध को चित्रित किया गया है।

4. आपको कई राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है यथा पद्म श्री, पद्म भूषण, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, फेलो ऑफ संगीत नाटक अकादमी, कालीदास सम्मान तथा साहित्य कला परिषद। आपको सिटी ऑफ क्लेवलैंड (ओहियो) में सम्मानित किया गया। आपको श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट की डिग्री प्रदान की गई और देवस्थानम तिरुपति द्वारा अस्थाना नर्तकी ऑफ लॉर्ड वेंकटेश्वर की उपाधि दी गई।

Dr. Yamini Krishnamurti

Dr. Yamini Krishnamurti is one of the greatest exponents of Indian classical dance, whose name has become synonymous with Bharatanatyam.

2. Born on January 28, 1940, Dr. Yamini's contribution to Indian classical dance has been hailed as unique as she enriched the repertoire with numbers from vast Sanskrit literature apart from resurrecting old "Devadasi' items both in Bharatanatyam and Kuchipudi. In the rhythmic techniques she set a vibrant trend by adopting the fastest and the most complicating 'tal' patterns. Perhaps it is this area where a new trend was set. She is best known for her world wide stage exposition of Kuchipudi and Odissi. She has been hailed as a trend setter and path breaker in Bharatanatyam, commended as the one who greatly was responsible for reviving Kuchipudi and acclaimed as the one who has given a new dimension to the Odissi. She is a living legend today in this country in the arena of classical dance and has broken fresh and most luminous ground in her efforts in the field of classical dance.

3. Dr. Yamini was responsible for putting Bharatanatyam and Kuchipudi in the national and international maps. She popularized dance in North of India too. She founded Yamini School of Dance in Delhi. She authored books – Natya and Passion for Dance. A film was produced by Film Division Govt. of India on her and Tele serials named Natyamurti and Depicting the relation with Temple and — Dance.

4. Dr. Yamini has been honoured with various state, national and international awards such as Padma Shree, Padma Bhushan, Sangeet Natak Academy Award, Fellow of Sangeet Natak Academy, Kali Das Samman and, Sahitya Kala Parishad. She was honoured at City of Cleveland (Ohio). She was conferred doctorate by Sri. Venkateswara University and Asthana Nartaki of Lord Venkateshwar by Devasthanam Trupati.